International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

जयशंकर प्रसाद की आकाशदीप कहानी में सामाजिक चेतना

राकेश कुमार शर्मा

सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर, राजस्थान, भारत

सार

जयशंकर प्रसाद विरचित 'आकाशदीप' कहानी की कथावस्तु अबला कही जाने वाली अनाथ युवती चंपा की स्वातन्त्रय,लालसा पिता के हत्यारे से प्रतिशोध और फिर उसी से प्रेम करने के कारण उपजे अंतर्द्वंद पर आधारित है। उसका यह अंतरद्वंद समय और परिस्थितियों के चलते किस प्रकार मानव सेवा में परिणित होकर उसे प्रेम का बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है। यही इस कहानी की कथावस्तु है। कहानी की कथावस्तु जयशंकर प्रसाद के उस आदर्शवाद से प्रेरित है, जिसके सम्मुख व्यक्तिगत प्रेम, सुख-समृद्धि की लालसा व्यक्ति को तुच्छ लगने लगती है और वह सर्वस्व का परित्याग करके लोक-कल्याण के मार्ग पर स्वयं को समर्पित कर देता है। उसी में वह अपने जीवन की सार्थकता मानता है। आकाशदीप कहानी का आरंभ समुद्र की तरंगों पर हिचकोले खाते पोत पर बंदी बनाकर रखे गए 2 बंदियों के वार्तालाप से होता है। दोनों बंदी एक दूसरे से अपरिचित और अनजान हैं, तूफान के कारण पोत की व्यवस्था भंग हो जाती है और दोनों परिस्थितियोंवश रात्रि के अंधकार में लुढ़कते हुए एक दूसरे से टकरा जाते हैं। दोनों बंधन मुक्त होना चाहते हैं और अपने प्रयास में सफल भी हो जाते हैं। जब दोनों हर्षातिरेक से एक दूसरे को गले लगाते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि उनमें से एक स्त्री है और दूसरा पुरुष। स्त्री का नाम चंपा और पुरुष का नाम बुद्ध गुप्त है। चंपा पोताध्यक्ष मणिभद्र के प्रहरी की एकलौती किशोर छत्रिय पुत्री है, 8 बरस से पोत ही उसका घर है। बुद्धगुप्त एक युवा जलदस्यु है जो ताम्रलिप्त का छत्रिय है। पोत को लूटने के उपक्रम में चंपा के पिता बुद्धगुप्त के हाथों मारे जा चुके हैं।

परिचय

आकाशदीप जयशंकर प्रसाद का तीसरा कहानी संग्रह है, जिसका प्रकाशन सन् १९२९ ई॰ में भारती भंडार, इलाहाबाद से हुआ था।[1] इसमें संकलित कहानियों की कुल संख्या उन्नीस है।[2] जयशंकर प्रसाद विरचित 'आकाशदीप' कहानी की कथावस्तु अबला कही जाने वाली अनाथ युवती चंपा की स्वातन्त्रय,लालसा पिता के हत्यारे से प्रतिशोध और फिर उसी से प्रेम करने के कारण उपजे अंतर्द्वंद पर आधारित है। [1,2]उसका यह अंतरद्वंद समय और परिस्थितियों के चलते किस प्रकार मानव सेवा में परिणित होकर उसे प्रेम का बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है। यही इस कहानी की कथावस्तु है। कहानी की कथावस्तु जयशंकर प्रसाद के उस आदर्शवाद से प्रेरित है, जिसके सम्मुख व्यक्तिगत प्रेम, सुख-समृद्धि की लालसा व्यक्ति को तुच्छ लगने लगती है और वह सर्वस्व का परित्याग करके लोक-कल्याण के मार्ग पर स्वयं को समर्पित कर देता है। उसी में वह अपने जीवन की सार्थकता मानता है।

आकाशदीप कहानी का आरंभ समुद्र की तरंगों पर हिचकोले खाते पोत पर बंदी बनाकर रखे गए 2 बंदियों के वार्तालाप से होता है। दोनों बंदी एक दूसरे से अपरिचित और अनजान हैं, तूफान के कारण पोत की व्यवस्था भंग हो जाती है और दोनों परिस्थितियोंवश रात्रि के अंधकार में लुढ़कते हुए एक दूसरे से टकरा जाते हैं। दोनों बंधन मुक्त होना चाहते हैं और अपने प्रयास में सफल भी हो जाते हैं। जब दोनों हर्षातिरेक से एक दूसरे को गले लगाते हैं, तब उन्हें पता चलता है कि उनमें से एक स्त्री है और दूसरा पुरुष। स्त्री का नाम चंपा और पुरुष का नाम बुद्ध गुप्त है। चंपा पोताध्यक्ष मणिभद्र के प्रहरी की एकलौती किशोर छत्रिय पुत्री है, 8 बरस से पोत ही उसका घर है। बुद्धगुप्त एक युवा जलदस्यु है जो ताम्रलिप्त का छत्रिय है। पोत को लूटने के उपक्रम में चंपा के पिता बुद्धगुप्त के हाथों मारे जा चुके हैं।

पोताध्यक्ष मणिभद्र ने अपनी कामवासना की तृप्ति में विफल होकर चंपा को बंदी बनाकर रखा। स्वातंत्र्य युद्ध में मणिभद्र चंपा और बुद्धगुप्त द्वारा मारा जा चुका है,पोत के नायक ने युद्ध में परास्त होकर उनकी शरण ले ली है। 2 दिन पश्चात पोत एक नए दीप पर लंगर डाल देता है। बुद्ध गुप्त उस द्वीप का नाम चंपा द्वीप रख देता है।

दोनों की चंपा द्वीप पर रहते 5 बरस बीत गए। संध्या समय चंपा एक दीप को जलाकर मंजूषा में रखकर दीपाधार को डोरी खींचकर ऊपर आकाश में चढ़ा रही है। द्वीप पर बुद्धगुप्त और चंपा का राज चलता है। बुद्धगुप्त की आज्ञा से सभी द्वीपवासी चंपा को रानी कहते हैं; क्योंकि चंपा अपने पिता के हत्यारे जलदस्यु बुद्धगुप्त को क्षमा नहीं कर पाई है। अंततः चंपा उसके सम्मुख अपना हृदय हारकर अपना प्रतिशोध का कृपाण निकालकर समुद्र में फेंक देती हैं। इस पर बुद्धगुप्त उससे कहता है-"तो आज से मैं विश्वास करूं क्षमा कर दिया गया?" इस पर चंपा उससे कहती है- 'विश्वास? कदापि नहीं बुद्धगुप्त! जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी,

उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूं? मैं तुम्हें घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूं। अंधेर है जलदस्यु! तुम्हें प्यार करती हूं।" चंपा रो पड़ी।

1 दिन किसी समारोह का आयोजन किया जा रहा था। बांसुरी ढोल बज रहे थे, फूलों से सजी वन बालाएं नाच रही थीं। चंपा ने सहचरी जया से पूछा-"यह क्या है जया?" जया ने हंसकर उत्तर दिया- "आज रानी का ब्याह है न?" चंपा को इस पर विश्वास ना हुआ। उसने उसे झकझोरकर पूछा- "क्या यह सच है?" तभी बुद्धगुप्त कहता है- "यदि तुम्हारी इच्छा हो तो यह सच भी हो सकता है चंपा।" इस पर चंपा प्रतिप्रश्न करती है-"क्या मुझे निस्सहाय और कंगाल जानकर तुमने आज सब प्रतिशोध लेना चाहा?" बुद्धगुप्त अपना पक्ष रखता हुआ कहता है कि मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूं चंपा! वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे! बुद्धगुप्त अंततः चंपा के पैर पकड़कर कहता है कि मुझे अपने देश भारतवर्ष की बहुत याद आती है, मैं वहां लौटना चाहता हूं। चलोगी चंपा? पोतवाहिनी पर असंख्य धनराशि लादकर राजरानी-सी जन्मभूमि के अंक में? इस पर चंपा ने उसके हाथ पकड़ लिए। किसी आकस्मिक झटके ने एक पल भर के लिए दोनों के अंधरों को मिला दिया। सहसा चैतन्य होकर चंपा ने कहा-"बुद्धगुप्त! मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है; सब जल तरल है; सब पवन शीतल है। प्रिय नाविक! तुम स्वदेश लौट जाओ, विभवों का सुख घूमने के लिए, और मुझे, छोड़ दो इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दुख की सहानुभूति और सेवा के लिए।"[3,4]

एक दिन स्वर्ण-रहस्य के प्रभात में चंपा ने अपने दीप-स्तंभ पर से देखा-सामुद्रिक नावों की एक श्रेणी चंपा का उपकूल छोड़कर पश्चिम-उत्तर की ओर महाजल-व्याल के समान संतरण कर रही है। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

यह कितनी ही शताब्दियों पहले की कथा है। चंपा आजीवन उस दीप स्थल में आलोक जलाती रही। किंतु उसके बाद भी बहुत दिन, दीप-निवासी, उस माया-ममता और स्नेह-सेवा की देवी की समाधि-सदृश पूजा करते थे।
1 दिन काल के कठोर हाथों ने उसे भी अपनी चंचलता से गिरा दिया।

विचार-विमर्श

हिंदी कथा साहित्य की कुछ अमर कृतियों में से जयशंकर प्रसाद की आकाशदीप कहानी भी एक है। इस कहानी की नायिका चंपा ही कहानी की मुख्य नारी पात्रा है। वह अपने वीर और बलिदानी पिता की एकमात्र संतान है। उसकी चारित्रिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1. सुंदर बालिका - चंपा अति सुंदर बालिका है। वह सौंदर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। यह उसके अतीव सौन्दर्य का ही प्रभाव था कि बुद्धगुप्त जिसके नाम से बाली, जावा और चंपा का आकाश पूंजता था, पवन थर्राता था, घुटनों के बल चंपा के सामने; प्रणय निवेदन करता, छलछलाई आंखों से बैठा था।

2. निडर, स्वाभिमानी और साहसी - चंपा, निडर स्वाभिमानी और साहसी है। उसकी निडरता का पता तब चलता है जब मणिभद्र उसके समक्ष घृणित प्रस्ताव रखता है और वह उसके आश्रय में रहते हुए भी उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। उसके स्वाभिमानी होने का प्रमाण उसके बंदी बनाए जाने पर मिलता है। उसे बंदी होना स्वीकार है, लेकिन घृणित प्रस्ताव स्वीकार नहीं। उसके साहस का परिचय अनजाने द्वीप पर सबसे पहले उतारने पर मिलता है।[5,6]

3. आदर्श प्रेमिका - चंपा के हृदय में प्रेम का अथाह सागर हिलोरे लेता है, परंतु वह इसे प्रेम- सागर की लहरों को नियंत्रण में रखना जानती है। बुद्धगुप्त जब भी उसके पास आता है वह उस पर न्योछावर हो जाती है। उसके प्रेम का वर्णन स्वयं कहानीकार ने इन शब्दों में किया है- "उसे सौरभ से पागल चंपा ने बुद्धगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिए। वहां एक आलिंगन हुआ, जैसे छितिज में आकाश और सिन्धु का।"

4. आदर्श संतान - चंपा अपने माता पिता की आदर्श संतान है। उसे अपनी माता के द्वारा पिता के पथ-प्रदर्शन के प्रत्येक रूप में आकाशदीप जलाना सदैव याद रहता है। उसके पिता की मृत्यु का कारण एक जलदस्यु था, यह वह कभी नहीं भूल पाती। वह बुद्धगुप्त से कहती है कि यह आकाशदीप मेरी मां की पुण्य स्मृति है। वह बुद्धगुप्त को जलदस्यु से संबोधित कर अपने सामने से हट जाने के लिए भी कहती है।

5. अंतर्द्वंद - चंपा का पूरा चरित्र अंतर्द्वंद की भावना से भरा हुआ है। दीप वासियों के प्रति उसका प्रेम और व्यक्तिगत प्रेम का सहज अंतर्द्वंद उसको घेरे रहता है। एक और वह कर्तव्य निर्वाह के लिए अपने प्रेम को निछावर कर देती है तो दूसरी और व्यक्तिगत प्रेम के गौरव की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग भी कर देती है। उसको अंतर्द्वंद इन शब्दों में व्यक्त हुआ है-

बुद्धगुप्त! मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है; सब जल तरल है; सब पवन शीतल है। कोई विशेष आकांक्षा हृदय में अग्नि के समान प्रज्वलित नहीं। सब मिलाकर मेरे लिए एक शून्य है। और मुझे, छोड़ दो इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दुख की सहानुभूति और सेवा के लिए।[7,8]

'आकाशदीप' कहानी माया ममता और स्नेह-सेवा की देवी चम्पा की मार्मिक व्यथा-कथा है। भाव-प्रवण छायावादी कवि प्रसाद की इस कहानी में चम्पा के पावन चरित्र का मनोहर चित्रण है। कथा का विकास तीव्र गति से हुआ है। कौतूहल और रोचकता से परिपूर्ण सहज भाव से गतिशील होती हुई यह कहानी अन्त में हमारे हृदय को बेध जाती है। नाटककार प्रसाद के अद्भूत संवाद सौष्ठव से परिपूर्ण इस कहानी में काव्यात्मक माधुर्य है, प्रकृति के मनोरम दृश्य है, भाषा-लालित्य है और एक मोहक सम्प्रेषणीयता है। कुल मिलाकर यह कहानी प्रसादजी की कहानी-कला का उत्कृष्ट निदर्शन है।

परिणाम

आकाशदीप' एक बन्दीगृह में आलिंगनबद्ध हो जाने वाले दो प्रवासी भारतीयों की कहानी है। ये दो प्रवासी भारतीय बुद्धगुप्त और चम्पा है। चम्पा का पिता जलदस्यु बुद्धगुप्त के साथियों से संघर्ष करता हुआ मारा जाता है। चम्पा के पिता वणिक मणिभद्र के यहाँ प्रहरी का काम करते थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् मणिभद्र ने चम्पा को अपनी बनाना चाहा और उसके मना करने पर उसे बन्दी बना लिया गया। बुद्धगुप्त भी बन्दी था पर चम्पा की सहायता से उसे मुक्ति मिल गयी। दोनों ने मिलकर नाव के नाविकों और प्रहरियों को नष्ट कर नाव पर अधिकार कर लिया और नाविक को अपने अनुसार चलने को बाध्य किया। नाव चलकर एक नये द्वीप पर जा पहुँची जिसका नाम चम्पाद्वीप रखा गया।

बुद्धगुप्त ने अपने परिश्रम, पुरुषार्थ से बाली, जावा और चम्पा द्वीपों की व्यवस्था की तथा चम्पा इन द्वीपों की रानी हो गयी। बुद्धगुप्त चम्पा को अपनी हृदयेश्वरी मानता था पर चम्पा उसे पृथक ही रहना चाहती थी। वह उसे अपने पिता का हत्यारा समझती थी। चम्पा के हृदय में प्रेम और घृणा दोनों भाव उमङ-घुमङ रहे थे। बुद्धगुप्त उसे बताता है कि उसके पिता उसके शस्त्र-प्रहार से नहीं मरे थे। वे तो एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे थे। परन्तु चम्पा अपने प्यार को दबाकर, विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। वह तो विवाह न करने का व्रत पहले ही ले चुकी थी। बुद्धगुप्त एक निराश प्रेमी बना चम्पा से आज्ञा लेकर स्वदेश लौटता है।

चम्पा वहाँ रहकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसे जाते हुए निहारती रहती है। वह द्वीप पर आजीवन एक स्तम्भ पर दीप जलाती रहती है। एक दिन काल के कठोर हाथ उसे भी अपनी चंचलता से गिरा देते है।
किसी भी अच्छे कथानक में रोचकता, सुसंगठन और जिज्ञासा आदि गुण होने चाहिए। ये गुण 'आकाशदीप' कहानी के कथानक में आद्यन्त व्याप्त है। जिज्ञासा आरम्भ से ही स्थान ग्रहण कर लेती है। दोनों प्रवासी भारतीय आकस्मिक रूप से मिलते है। बुद्धगुप्त को पता चलता है कि दूसरा साथी एक स्त्री है। इससे कथानक में रोचकता भी बनी रहती है। कथावस्तु संगठित भी है, इसमें प्रारम्भ, विकास, चरम अवस्था और अवसान का क्रमिक संयोजन है। प्रेम, आदर्श, व्रत, त्याग और मानव-हृदय के स्वाभाविक गुणों का सुन्दर सामंजस्य कथाकार ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है।[9,10]

किसी भी सुन्दर कहानी में पात्रों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए तथा संक्षेप में ही उनके चरित्र की विशेषताओं का उद्घाटन हो जाना चाहिए। आलोच्य कहानी में चम्पा और बुद्धगुप्त दो ही प्रमुख पात्र है। पोतनायक और जया दो गौण पात्र है। बुद्धगुप्त चम्पा को नवीन द्वीप पर पहुँचाने तक साथ रहता है और जया चम्पा की सहचरी के रूप में रहती है पर वह कहानी के मध्य में रहती है। चम्पा के चरित्र में निर्भीकता, स्वतन्त्र प्रेम, पैतृकता पर गर्व, प्रेम की पुलक, दृढ़ निश्चय आदि गुण है जो सहज ही स्पष्ट हो जाते है। वह जाह्नवी के तट पर उपस्थित चम्पा नगरी की क्षत्रिय बालिका है और माता का देहावसान हो जाने पर अपने पिता के साथ नाव पर हर समय रहती है और सामुद्रिक यात्राएँ करती है।

बुद्धगुप्त ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय है जो परिस्थितियों के कारण जलदस्यु बन गया है। उसके चरित्र में हमें वीरता, पुरुषार्थ, स्वभाव की कठोरता, सच्चे प्रेम की भावना, कोमलता का समावेश, वियोग को स्वीकार करने की क्षमता आदि गुण मिलते है।

यद्यपि वह चम्पा केा अपनी जीवन-संगिनी बनाना चाहता है पर उसकी विवशता को देखकर वह वियोग की धरोहर लेकर स्वदेश लौट जाता है। इस प्रकार आलोच्य कहानी में पात्रों की संख्या सीमित है तथा पात्रों का चरित्र-चित्रण भी स्वाभाविक, सजीव और हृदयस्पर्शी है।

संवादों के गुणों का विवेचन करने पर यह ज्ञात होता है कि संवाद संक्षिप्त, सरल, सजीव, स्वाभाविक और तीक्ष्ण व पात्रानुकूल होने चाहिए। संवादों में तीन गुण और बताये जाते है कि वे (1) चरित्राभिव्यंजन में सहायक हों, (2) कथा को गति प्रदान करने वाले हों और (3) वातावरण की सृष्टि करने वाले होने चाहिए। आकाशदीप कहानी में इनमें से अधिकांश गुण मिल जाते है। प्रसाद एक कवि के साथ-साथ उच्चकोटि के नाटककार भी थे।

अतः नाटकीयता का स्पष्ट प्रभाव कहानी पर है। उन्हें ऐतिहासिकता प्रिय थी, अतः इतिहास का भी प्रभाव कहानी पर है। कहानी का प्रारम्भ ही कथोपकथन से होता है। कथोपकथनों में उपर्युक्त सभी गुण प्रायः विद्यमान है। [11,12]उदाहरणार्थ-

चरित्राभिव्यंजक संवाद-

बुद्धगुप्त की स्वतंत्र-प्रियता, सूझ-बूझ, निर्भीकता और वीरता इन संवादों में द्रष्टव्य है- नायक ने कहा- 'बुद्धगुप्त! तुमको मुक्त किसने किया' (कृपाण दिखाकर) बुद्धगुप्त ने कहा- 'इसने'। नायक ने कहा- 'तो तुम्हें फिर बन्दी बनाऊँगा।' 'किसके लिए ? पोताध्यक्ष मणिभद्र अतल जल में होगा, नायक! अब इस नौका का स्वामी मै हूँ।' कथा को गति देने वाले संवाद- चम्पा के प्रति बुद्धगुप्त के हृदय में उत्पन्न प्रेम कथोपकथनों में ही उभर आता है। वह क्या कुछ करने को तैयार नहीं है। पर चम्पा विवाह न करने का व्रत ले चुकी है। वह कथा संवादों से ही आगे बढ़ती है- 'यह क्या है जया ? इतनी बालिकाएँ कहाँ से बटोर लाई ?' 'आज रानी का ब्याह है न ?' कहकर जया ने हँस दिया।

बुद्धगुप्त विस्तृत जलनिधि की तरफ देख रहा था। उसे झकझोर कर चम्पा ने पूछा- 'क्या यह सच है ?' 'यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो यह सच भी हो सकता है। कितने वर्षों से मैं इस ज्वालामुखी को अपनी छाती में दबाये हूँ।' 'चुप रहो महानाविक! क्या मुझे निस्सहाय और कंगाल जानकर तुमने आज सब प्रतिशोध लेना चाहा ?' 'मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूँ चम्पा! वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र-प्रहार से मरे।' वातावरण की सृष्टि करने वाले संवाद- विवेच्य कहानी के संवाद वातावरण की सृष्टि भी करते है। कहानी के पहले-पहले संवाद ही सामुद्रिक तूफान, शून्य, एकान्त, भय, शीत आदि वातावरण को साकार कर देती है-

'बड़ा शीत है। कहीं से कोई कम्बल डालकर शीत से मुक्त तो करता।' 'आंधी की संभावना है। यही अवसर है। आज मेरे बन्धन शिथिल है।' 'तो क्या तुम भी बन्दी हो ?' 'हाँ, धीरे बोलो। इस नाव पर केवल दस नाविक और प्रहरी है।' 'शस्त्र मिलेगा?' 'मिल जायेगा। पोत से सम्बद्ध रज्जु काट सकोगे ?' 'हाँ।'[13,14]

निष्कर्ष

आलोच्य कहानी में कितनी ही शताब्दियों पूर्व की घटनाओं की ओर संकेत है। उस समय भारतीय नाविक और व्यापारी जावा, बाली आदि द्वीपों में जाया करते थे तथा समुद्री आपत्तियों का सामना किया करते थे। भारतीय व्यापारी अपने देश को तो धन-धान्य से सम्पन्न बनाते ही थे, साथ ही वे इन द्वीपों के असभ्य लोगों का सभ्यता और मानवता का पाठ भी पढ़ाते थे। यही देशकाल, यही परिस्थितियाँ तथा यही वातावरण कहानी में सफलतापूर्वक साकार किया गया है। इस प्रकार देशकाल और वातावरण की दृष्टि से भी यह कहानी सफल और प्रभावी है। आलोच्य कहानी का उद्देश्य देश-प्रेम और मानव-प्रेम के आदर्शों को स्पष्ट करता रहा है। प्रसादजी एक आदर्शवादी कालाकार थे, अतः उनका आदर्शवाद यहाँ भी स्पष्ट है। चम्पा और बुद्धगुप्त के हृदय में वैयक्तिक प्रेम भी पनप जाता है, किन्तु यह प्रेम कहीं भी गन्दा नहीं हो पाता है। यह वियोग और त्याग की अग्नि में तपकर और पवित्र बनना चाहता है। देश-प्रेम और मानव-प्रेम का संकल्प पूरा करने के लिए कथाकार ने चम्पा को सुदूर द्वीप में छोड़ दिया है जहाँ पर निरीह और भोले-भाले प्राणियों के दुख में सहानुभूति और सेवा के लिए जीवित रहती है और बुद्धगुप्त

को वियोग की धरोहर देकर स्वदेश वापस कर दिया है। उसमें भी आदर्श प्रेम दिखाया है। बुद्धगुप्त भी कभी किसी भी अवसर पर उत्तेजित और बल प्रयोग कर प्रेमिका को पाने का इच्छुक नही दिखलाई देता है। इस प्रकार प्रसादजी ने अपने आदर्शवादी उद्देश्य की बडे ही सफल ढंग से इस रचना में उतारा है। आकाशदीप' कहानी की भाषा संस्कृत शब्दावली से युक्त शुद्ध साहित्यिक भाषा है। भाषा पर कवि प्रसाद की छाया स्पष्ट हैं आलंकारिता, लाक्षणिकता, सरसता, भावुकता आदि गुणों को भाषा में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साहित्यिक भाषा का सौंदर्य पृथक से मन को मोह लेता है।[15,16] भाषा के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

1. तारकखचित नील अम्बर और नील समुद्र के अवकाश में पवन ऊधम मचा रहा था। अन्धकार से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र में आंदोलन था। नौका लहरों में विकल थी।
2. चन्द्र के उज्जवल विजय पर अन्तरिक्ष में शरद्-लक्ष्मी ने आशीर्वाद के फूलों और खीलों में बिखेर दिया।
3. पश्चिम का पथिक थक गया था। उसका मुख पीला पड गया था। अपनी शांत गम्भीर हलचल में जलनिधि विचार में निमग्न था। वह जैसे प्रकाश की उन्मीलन किरणों से विरक्त था।

कहानी मुख्यतः वर्णात्मक शैली में है पर आलंकारिक, लाक्षणिक और प्रतीकात्मक शैलियों का प्रायोग भी इसमें सहज ही देखा जा सकता है। आलोच्य कहानी में कुछ अन्य विशेषताएँ भी है। यह कहानी इतिहास और कल्पना के सुन्दर समन्वय पर आधारित है।[17,18] यद्यपि कल्पना का अंश अधिक है पर इसकी ऐतिहासिक झलक से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। प्रसाद का आदर्शवादी दृष्टिकोण भी कहानी में उभरकर सामने आया है। कहानी का शीर्षक 'आकाशदीप' भी उचित और सार्थक है। कहानी का समूचा कथानक चम्पा के चरित्र के चारों ओर ही घूमता है तथा 'आकाशदीप' उसका प्रेरणास्रोत है। अतः आकाशदीप ही कहानी का शीर्षक रखा गया है। फिर 'आकाशदीप' की भांति ही चम्पा का प्रेम निष्कलुष, एकाकी और दूर-देश का वासी बना रहता है। वह आजीवन आकाशदीप जलाती रहती है। उपर्युक्त विवेचनोपरान्त कहा जा सकता है कि 'आकाशदीप' कहानी कथा-तत्त्वों के आधार पर खरी उतरती है तथा अपनी विशेषताओं के कारण पाठकों का हृदय मोह लेती है। प्रसाद जैसे उत्कृष्ट कलाकार की कला का प्रयास भी हम इस कहानी में सहज ही पा लेते है। आकाशदीप एक अत्यन्त सफल और सुन्दर कहानी निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाती है।[19,20]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. जयशंकर प्रसाद, विनिबंध, रमेशचन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रित संस्करण-2015, पृष्ठ-94.
2. ↑ प्रसाद की सम्पूर्ण कहानियाँ एवं निबन्ध, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2009, पृष्ठ-35.
3. सुधाकर पांडेय, हिंदी विश्वकोश, खंड-७, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संस्करण-१९६६ ई॰, पृष्ठ-४९०.
4. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xxxix.
5. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-१३.
6. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-२०.
7. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-२३.
8. ↑ हिंदी साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग-१०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; वि॰ (=१९७१ई॰), पृ॰-१४६.
9. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xviii-xix.
10. ↑ हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, सं॰ धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण-२०११, पृष्ठ-२१०.
11. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xix.
12. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-१७.
13. ↑ आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पेपरबैक संस्करण-२००१ ई॰, पृष्ठ-३६७.
14. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-३१.
15. ↑ डॉ॰ प्रेमशंकर, प्रसाद का काव्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृष्ठ-171.
16. ↑ नागरीप्रचारिणी पत्रिका, 'जयशंकर प्रसाद विशेषांक', वर्ष-९२-९४, सं॰ शिवनंदनलाल दर एवं अन्य, पृष्ठ-७२.

17. ↑ नागरीप्रचारिणी पत्रिका, 'जयशंकर प्रसाद विशेषांक', वर्ष-९२-९४, सं॰ शिवनंदनलाल दर एवं अन्य, पृष्ठ-७७.
18. ↑ जयशंकर प्रसाद ग्रन्थावली, भाग-१, संपादक- ओमप्रकाश सिंह, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-२०१४, पृष्ठ-xxi.
19. ↑ जयशंकर प्रसाद (विनिबंध), रमेशचन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रित संस्करण-२०१५, पृष्ठ-२७.
20. ↑ प्रसाद का सम्पूर्ण काव्य, संपादन एवं भूमिका- डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण-२००८, पृष्ठ-३६.